कहीं यह नोट नकली तो नहीं?

कुछ वर्षों पहले जब रंगीन फोटोकॉपी मशीनें बाज़ार में आई थीं तब यह डर भी उभरा था कि इनका उपयोग नोटों की फोटोकॉपी बनाने में किया जा सकता है। अब यही स्थिति इंकजेट प्रिंटर्स के साथ उभर रही है। तो अगली बार जब आप मद्धिम रोशनी वाले किसी रेस्तरां में खाने का लुत्फ उठाएं, तो नोट ज़रा ध्यान से देखें। हो सकता है ये इंकजेट प्रिंटर पर छापे गए हों।

सिक्यूरिटी प्रिंटिंग में अग्रणी कम्पनी डे ला रू ने हाल ही में यह चेतावनी दी है। कम्पनी ने तो इस तरह के नकली नोट छापने वालों को एक नाम भी दिया है - डिजीफेटर्स। सामान्य नकली नोट छापने वालों को काउन्टर फेटर्स कहा जाता है। कम्पनी के अनुसार नक्कालों की इस नई पीढ़ी के पीछे मूलतः सस्ते कलर प्रिंटर्स का हाथ है। डे ला रू ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि आजकल बैंकों में ऐसे नकली नोट काफी मात्रा में आ रहे हैं। फोटोकॉपी के ज़रिए भी नकली नोट बनते थे मगर गौरतलब बात यह है कि रंगीन फोटोकॉपी मशीनें बहुत महंगी होती हैं और उनसे कॉपी निकालना भी महंगा काम है। मगर इंकजेट प्रिंटर्स तो कौड़ी के भाव मिल रहे हैं। कई कम्प्यूटरों के साथ तो बढ़िया इंकजेट प्रिंटर मुफ्त मिलते हैं। कैनन, एप्सन, हेवलेट-पैकार्ड और लेक्समार्क जैसी कम्पनियां तो आजकल प्रिंटर, कॉपियर, फैक्स और स्कैनर सब एक में मिलाकर 100 पाउण्ड में बेच रही हैं। यह प्रिंटर भी 4800 बिन्दु प्रति वर्ग इंच का होता है जो बारीक से बारीक चीज़ें भी छाप सकता है। इन सस्ते उपकरणों की वजह से नक्कालों के पौ बारह हो गए हैं।

जब फोटोकॉपी मशीनों के संदर्भ में यह समस्या उभरी थी तब इन मशीनों के निर्माताओं ने स्वयं पहल करके अपनी मशीनों में ऐसी व्यवस्था की थी कि यदि किसी दस्तावेज पर वाटरमार्क वगैरह निशान हो तो मशीन उसकी कॉपी नहीं बनाती थी। वैसे उन्होंने यह व्यवस्था शायद इसलिए भी की थी कि अन्यथा उन मशीनों पर प्रतिबन्ध की नौबत आ जाती। मगर प्रिंटर कम्पनियों ने ऐसी कोई पहल नहीं की है। वे चाहें तो प्रिंटर सॉफ्टवेयर में यह व्यवस्था की जा सकती है। मगर शायद कम्पनियों को डर है कि इससे उनके प्रिंटर का कामकाज प्रभावित होगा। शायद पर्याप्त दबाव पड़े तो कम्पनियां ऐसी व्यवस्था करने पर विचार करेंगी। *(स्रोत विशेष फीचर्स)*